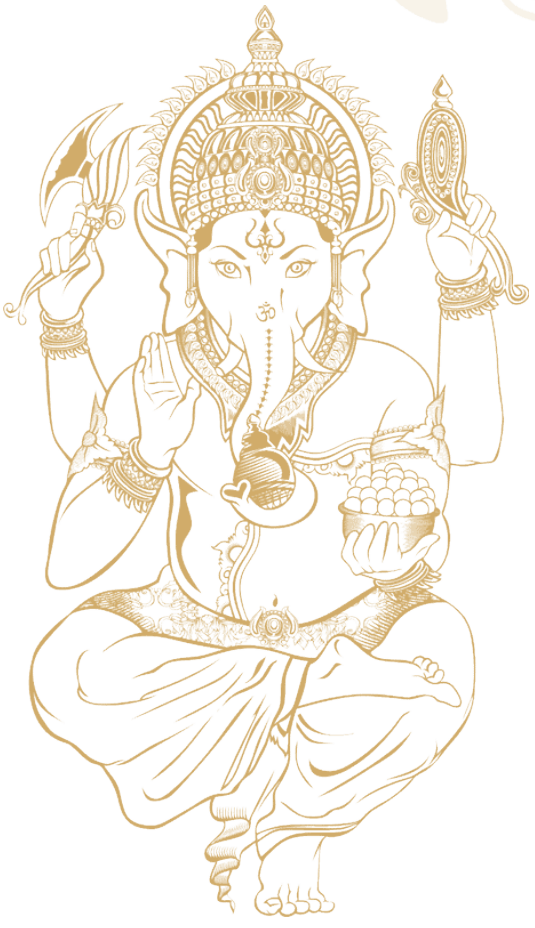

Yadwendra singh

Aishwarya Singh

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121024202

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
29/06/1996	जन्म तिथि	08/10/1996
शनिवार	दिन	मंगलवार
घंटे 14:45:00	जन्म समय	19:25:00 घंटे
घटी 24:07:41	जन्म समय(घटी)	33:51:19 घटी
India	देश	India
Gorakhpur	स्थान	Deoria
26:45:00 उत्तर	अक्षांश	26:31:00 उत्तर
83:23:00 पूर्व	रेखांश	83:48:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:03:32	स्थानिक संस्कार	00:05:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:05:55	सूर्योदय	05:50:41
18:53:50	सूर्यास्त	17:33:37
23:48:33	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:45

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
बुध 13वर्ष 11मा 12दि	20:11:10	तुला	लग्न	मेष	28:05:47	केतु 3वर्ष 8मा 20दि
शुक्र	14:05:33	मिथु	सूर्य	कन्या	21:44:51	सूर्य
11/06/2017	19:03:30	वृश्चि	चंद्र	सिंह	06:14:29	29/06/2020
11/06/2037	18:03:41	वृष	मंगल	कर्क	23:43:09	30/06/2026
शुक्र 11/10/2020	00:20:16	मिथु	बुध	कन्या	05:21:39	सूर्य 17/10/2020
सूर्य 11/10/2021	19:36:24	धनु व	गुरु	धनु	15:53:22	चन्द्र 17/04/2021
चन्द्र 12/06/2023	18:07:54	वृष व	शुक्र	सिंह	11:20:37	मंगल 23/08/2021
मंगल 11/08/2024	13:16:14	मीन	शनि व	मीन	09:14:45	राहु 18/07/2022
राहु 12/08/2027	19:24:52	कन्या व	राहु	कन्या	14:12:44	गुरु 06/05/2023
गुरु 12/04/2030	19:24:52	मीन व	केतु	मीन	14:12:44	शनि 17/04/2024
शनि 11/06/2033	09:47:11	मक व	हर्ष व	मक	06:49:49	बुध 22/02/2025
बुध 11/04/2036	03:04:01	मक व	नेप	मक	01:09:55	केतु 29/06/2025
केतु 11/06/2037	06:58:57	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	07:27:33	शुक्र 30/06/2026

लग्न-चलित

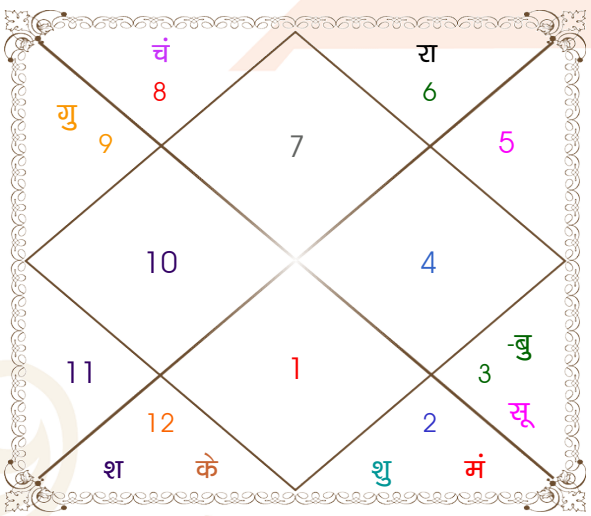

लग्न-चलित

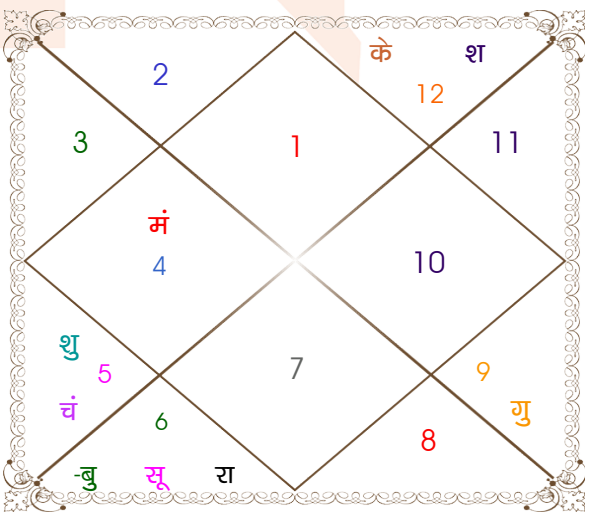

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मूषक	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	32.00		

ल्कूमदकतं`पदही का वर्ग सर्प है तथा ।पींूतलं`पदही का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ल्कूमदकतं`पदही और ।पींूतलं`पदही का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

ल्कूमदकतं`पदही मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

।पींूतलं`पदही मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

चतु: सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल ।पींूतलं`पदही कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल ।पींूतलं`पदही कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु ।पींूतलॅ पदही कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ल्कूमदकतं पदही कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ल्कूमदकतं पदही तथा ।पींूतलॅ पदही में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।